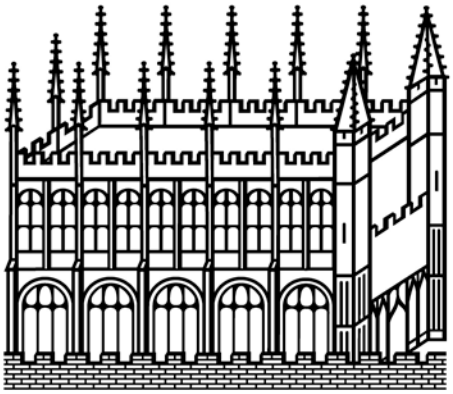

Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

4
Hindi misc. B 9
~~44 B 51~~
13 A 66

ARRANGEMENT OF CONTENTS.

Chapter.		Page.
I.	Descriptive of the attributes and providence of God, ...	1
II.	Illustrative of the character and work of Christ.	5
III.	Against the Hindú religion,	
§ 1.	Its observances generally, ...	11
§ 2.	Idol-worship, ...	19
§ 3.	Devtás and others, ...	21
§ 4.	Faqírs, ...	23
§ 5.	Gurus, ...	26
§ 6.	Caste, ...	28
§ 7.	Rám, ...	31
IV.	Respecting sundry virtues and vices.	
§ 1.	Sundry moral duties,...	44
§ 2.	Love, ...	47

§ 3. Truth and falsehood, ... 49
§ 4. Sundry vices, ... 51
V. On the duty of attention to religion, ... 52
VI. Regarding inconsideration, and neglect of religion, ... 57
VII. On the vanity of the world, ... 61
VIII. On the certainty of death, and uncertainty of life, ... 63
IX. On the future requital of good and evil conduct, ... 66
X. Hindú sayings, with which it is well to be acquainted, ... 67

EXPLANATION OF ABBREVIATIONS.

In indicating the authors of the verses, or the works from which the verses are taken, the following abbreviations are used.

Bág o Bahár	B. B.
Bájíd Ḳhán	B.
Brind-Satsaí	B. S.
Continued to the next verse	Contin.
Giradhar	G.
John Christian	J. C.
John Parsons	J. P.
Kabír	K.
Nazír	N.
Prem-Ságar	P. S.
Rájníti	R. N.
Rámáyaṇ, Áraṇya-Káṇḍ	R. Ár.
Rámáyaṇ, Ayodhyá-Káṇḍ	R. Ayod.
do. Bál-Káṇḍ	R. Bál.
do. Kiskindá-Káṇḍ	R. Kis.
do. Laṅká-Káṇḍ	R. Laṅk.
do. Uttar-Káṇḍ	R. Utt.
Sabhá-Bilás	S. B.
Satmat-Nirúpaṇ	S. M. N.
Sukh-Ságar	S. S.
Súr-Dás	S.
Tulsí-Dás	T.
Unknown	Unk.

छन्द संग्रह ।

CHAPTER I.

Descriptive of the attributes and providence of God.

दोहा ।

अलख अगोचर अलखगति · अजर अमर अबिकार ।
अटल अकाम अनादि अज · जगपालक करतार ॥
रसना एक अनेक गुन · कहंलग करूं बखान ।
मोहि अति दीन मलीनपर · द्रवहु सुकृपानिधान ॥ S. M. N.

चौपाई ।

बिनु पद चलै सुनै बिनु काना । कर बिनु करम करै बिधि नाना ॥
आनन रहित सकल रस भोगी । बिनु बानी बक्ता बड़ जोगी ॥
तन बिनु परस नैन बिनु देखा । ग्रहै घ्रान बिनु बास अशेखा ॥
अस सब भांति अलौकिक करनी । महिमा जासु जाइ नहि बरनी ॥ R. Bal.

कवित्त ।

पिंडुकी बपुरी बनमें सुमरे हर कंट टरे सिगरे मुररे ।
ढिग बाजके चोट चचान गही तल काढ़ि कमान कियो सररे ॥
तल कालहि काल भुअंग डस्यो सर बाजक लागि गयो सररे ।
जिनके रक्षपाल जगपाल धनी तिनको बलभद्र कहा डररे ॥ Unk.

N.B. जगपाल was गोपाल in the original.

कबित्त ।

जब दांत न थे तब दूध दयो जब दांत दयो कहा अन्न न दइहै ।
जो जलमें थलमें पंछी पशुके सुध राखत सो तोहरो भी रखिहै ॥
काहेके सोच करत मन मूरख सोच करत कछु हाथ न अइहै ।
जानको देत अनजानको देत जहानको देत सो तोहको भी दइहै ॥ B. B.

कबित्त ।

रूठे क्यों न राजा वातें कछु नहि काजा एक तूसे महराजा और कौनको सराहिये ।
रूठे क्यों न भाई वातें कछु न बसाई एक तूही है सहाई और कौन पास जाइये ॥
रूठे क्यों न मित्र भये शत्रु आठों जाम एक राउरे चरनके नेहको निबाहिये ।
संसार है रूठा एक तूही है अनूठा सब घूमेंगे अंगूठा एक तू न रूठा चाहिये ॥
B. B.

दोहा ।

जिन तोते हरये किये · श्याम काग हंस सेत ।
मोर बिचित्र जु रंग दिये · सो चिन्ता करि देत ॥ R. N.

दोहा ।

साहिब मेरा बानियां · सहज करे बैपार ।
बिन डंडी बिन पालरा · तौलत है संसार ॥ K.

दोहा ।

होय न तरवर मूल बिन · फूल नहि बिन करतार ।
सृष्टि भई यह रचित किमि · जौं नहि सिरजनहार ॥ J. P.

दोहा ।

कारज धीरै होतु है · काहे होत अधीर ।
समय पाय तरवर फलै · केतक सींचो नीर ॥ S. B.

CHAPTER II.

Illustrative of the character and work of Christ.

सवैया ।

जग पाप बिलोक सुशोक भरे · दिव धाम तजे महि आय ढरे ।
नर भेष लयो जग तार दियो · अपनेपर भारहि यीशु धरे ॥
नरको नहि आन सहाय मिले · अस जौं तिहु लोकहि ढूंढ मरे ।
जड़ जान कहे तिहि त्याग दये · बहु भांतिक देवहिं टेक करे ॥ J. C.

دنیا میں آکے آپ کو اِبن آدم کہا گیا
موسیٰ کو کوہ طور پر تجلي دکھا گیا
بہتیرے نبیونکي زباني سنا گیا
پیارا ھزار رنگ میں آکر چتا گیا
کوئي جانو یا نہ جانو اُسے میں تو پا گیا

تھا بھي وھي رھيگا وھي اور وھي ھی اب
کفارہ مومنونکا جہان بیچ ھی ایک رب
پاویگا اُس کو جو دل میں اُسکي رکھے طلب
تنکا بجا کے کہتا ھوں ھر ایک سے روز و شب
کوئي جانو یا نہ جانو اُسے میں تو پا گیا Unk.

दोहा ।

अंबर थांभ्यौ थंभ बिन · धरती अधर धराव ।
मनुष रूप ह्वै अवतर्यौ · देखत कलिकौ भाव ॥ S. B.

दोहा ।

वृक्ष फले न आपको · नदी न अचवें नीर ।
परस्वारथके कारने · ईश्वर धरे शरीर ॥ K.

The original has सन्तन (= the holy = ascetics) instead of ईश्वर.

अर्द्ध चौपाई ।

परहित लागि तजै जो देही । संतत संत प्रशंसहिं तेही ॥ R. Bal.

N. B.—Said by Kámdev with reference to his exposing himself to be consumed by the opening of Mahádev's third eye in the attempt to arouse him from his contemplations in order to his marrying Párvatí.

दोहा ।

तुलसी लोहा काठ संग · चलत फिरत जलमांह ।
बड़े न बूड़न देत हैं · जाकी पकड़े बांह ॥ T.

दोहा ।

बहु बंधनतें बंध्यो · एक बेचारा जीव ।
नहि छूटे बल आपनो · जौं न कुड़ावे पीव ॥ K. altered.

दोहा ।

बिरले नर पंडित गुनी · बिरले बूझनहार ।
दुखखंडन बिरले पुरुष · ते उत्तम संसार ॥ S. B.

अर्द्ध चौपाई ।

मूठ सुधरहिं सतसंगति पाई । पारस परसि कुधातु सुहाई ॥ R. Bal.

दोहा ।

सज्जनकौ दुखहू दिये · दुरजन पूरे आस ।
जैसे चन्दनकौं घिसे · सुन्दर देत सुबास ॥ S. B.

दोहा ।

सज्जन चित कबहू न धरत · दुरजन जनके बोल ।
पाहन मारे आमकौं · तउ फल देत अमोल ॥ S. B.

अर्द्ध चौपाई ।

बुन्द अघात सहैं गिरि जैसे । खलके बचन सन्त सह तैसे ॥ R. Kis.

N. B.–For जैसे and तैसे the original has, respectively, कैसे and जैसे ।

दोहा ।

बिना कहेहू सत पुरुष · परकी पूरे आस ।
कौन कहत है सूरकौं · घर घर करत प्रकास ॥ S. B.

दोहा ।

धन देकै जिय राखिये · जिय दै राखिये लाज ।
धन दे जिय दे लाज दे · एक प्रीतिके काज ॥ R. N.

दोहा ।

आतम औ परमातमा · अलग रहे बहु काल ।
सुन्दर मेला कर दिया · सत गुरु मिला दलाल ॥ K.

दोहा ।

गुरु तो ऐसा चाहिये · जो सिकलीगढ़ होय ।
सकल जनमका मूरचा · पलमें डारे खोय ॥ K. altered.

दोहा ।

गुरु कुलाल सिख कुंभ है · चुन चुन काढ़े खोट ।
अन्तर हाथ सहारा देत · बाहर मारे चोट ॥ K.

CHAPTER III.

Against the Hindú religion.

§ 1. *Its observances generally.*

श्लोक ।

श्रुतिर्विभिन्ना स्मृतयो विभिन्ना भिन्नं मुनीनां सकलं मतंच ।
धर्म्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां महाजनो येन गतः स पन्थाः ॥

From the Vana Parbba of the Mahábhárata.

Translation:—वेद भिन्न २ धर्म्मशास्त्र भिन्न २ और मुनियोंके सब मत भिन्न २ हैं धर्म्मका तत्त्व अगम्य गुफामें गुप्त है पन्थ वह है जिससे महापुरुष गये हैं । (महापुरुष = ascetics, or those who were eminent for their piety or religious austerity.)

अर्द्ध चौपाई ।

श्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई । छूट न अधिक अधिक अरुझाई ॥ R. Utt.

मन मलीन बिषय मन अतितन · पावन करत छिवारे ।
मरै न उरग अनेक जतन · बिल बिम बिबिधबिध मारे ॥ Unk.

दोहा ।

एकहि साधे सब सधै · सब साधे सब जाय ।
जो गहि सेवै मूलकौं · फूलै फलै अघाय ॥ T.

The uselessness of idol-worship.

सवैया ।

जप जोग करे तन साधि मरे · नर कोटि उपाय रचे भरमाए ॥
श्रुति चारि पुरान कुरान पढ़े · नहि भेद मिले तन झूठि सताए ॥
गुरु पंडित पीर फकीर फिरे · बहु भांतिक रूप बिरूप बनाए ॥
नहि ज्ञान लहे सत जान कहे · जड़ जौंलगि यीशु न देहि सिखाए ॥ J. C.

चौपाई ।

जप तप तीरथ जोग समाधी । कलि मल बिकल न कछु निरुपाधी ॥
करत सुकृत नहि पाप सिराहीं । किन्तु छनहि छन बाढ़त जाहीं ॥ T. (?)

श्लोक ।

मृच्छिलाधातुदार्वादि मूर्तावीश्वरबुद्धयः ।
क्लिश्यंतितपसामूढ़ाः परांशांतिंनयांतिते ॥

दोहा ।

तामस धर्म करहिं नर · जप तप मख ब्रत दान ।
दैव न बरषै धरनिपर · बोये न जामहिं धान ॥ R. Utt.

दोहा ।

तन सुखाय पिंजर करै · धरै रैन दिन ध्यान ।
तुलसी मिटै न बासना · बिना बिचारे ज्ञान ॥ T.

दोहा ।

माला फेरत युग गया · पाय न मनका फेर ।
करका मनका छाड़िके · मनका मनका फेर ॥ K.

The same ;—

मंका फेरते जन्म गया · गया न मनका फेर ।
करका मंका छाड़ दे · मनका मंका फेर ॥

दोहा ।

माला मोसों लड़ पड़ी · तू काहे फेरत मोहि ।
मनका माला फेर ले · करतार मिलावे तोहि ॥ Unk.

चौपाई ।

जियत पितासे दंगम दंगा । मुए पिता पहुंचावहिं गंगा ॥
जियत पिताकी पूछ न बात । मरे पिताको दाल औ भात ॥ Unk.

दोहा ॥

जीव बिन जीव जीए नाहि · जीवके जीव अहार ।
जीव दया मत छाड़िये · पंडित करो बिचार ॥ K.

चौपाई ।

बंधु सखा संग लेहिं बुलाई । बन मृगया नित खेलहिं जाई ॥ R. Bal.
पावन मृग मारहिं जिय जानी । दिन प्रति नृपहि देखावहिं आनी ॥

N.B.—This refers to Rám's killing animals for food, and is intended to furnish an argument against those who condemn that practice as sinful. To refute this argument, the next stanza may be referred to or quoted, viz.,

जे मृग राम बानके मारे । ते तनु तजि सुरलोक सिधारे ॥

To this an answer may be found in the following stanza. We no more kill the soul than Rám did, (if it be granted for argument's sake that irrational animals have immortal souls,) but, like Rám, we feed on the flesh, and, according to Hindú notions, have freed the soul from an inferior birth, which may lead to its attaining a superior one, or even emancipation.

अनुज सखा संग भोजन करहीं । मातु पिता आज्ञा अनुसरहीं ॥

दोहा ।

चोरी करे निहारूकी · करे सुईको दान ।
ऊंचे चढ़िके देखिहै · केतक दूर बिमान ॥ K.

दोहा ।

कथनी कथे अगाधकी · ज्यों आकाशमें गिद्ध ।
चारा वाके भूमिमें · उड़े भयो का सिद्ध ॥ K.

दोहा ॥
मेरा मुझको कुछ नहीं · जो कुछ है सो तोर ।
तेरा तुझको सौंपता · क्या लागे है मोर ॥ K.

§ 2. *Idol-worship.*

दोहा ।
तुलसी प्रतिमा पूजवो · ज्यों गुड़ियनका खेल ।
भेट भई जब पीवसों · धरे पिटारी मेल ॥ T.

The senselessness of idol-worship.

सवैया ।
निशि बासर पूजहिं नारि नरा · सिल काठक मूरति साजि गढ़ाए ॥
जुग नैन दये दुइ कान दये · मुख नाक दये कर पांव अटाए ॥
नहि देखि सकें नहि बोल सकें · इम स्वास बिहीन गमार बनाए ॥
बिनु जानक मूरति सेवि मरे · नर नायक जान सज्ञान कहाए ॥ J.C.

पत्थर पूजे जो हर मिले मैं पूजूं पहाड़ · उस पत्थरसे चक्की भली जो पीस खाए संसार ॥ Unk.

माला लक्कड़ देवा पत्थर गंगा यमुना पानी · रामा कृष्णा मरते देखा चारो बेद कहानी ॥ Unk.

घन घन घन घन घण्टा बजावै · औ कै नख जपना ।
ठाकुर के मुख सीथ लगावै · गपकि जात सब अपना ॥ Unk.

दोहा ।

कल्प हलको चित्र लिखि · कीन्हे बिनै हजार ।
बित्त न पावे ताहिसों · तुलसी देखु बिचार ॥ T.

---

§ 3. *Devtas and others.*

चौपाई ।

नारद शिव बिरंचि सनकादी । जे मुनिनायक आतमबादी ॥
मोह न अंध कीन्ह केहि केही । को जग काम नचाव न जेही ॥
तृष्णा केहि न कीन्ह बौराहा । केहिके हृदय क्रोध नहिं दाहा ॥ Contin.

दोहा ।

ज्ञानी तापस शूर कबि · कोबिद गुन आगार ।
केहिके लोभ बिडंबना · कीन्ह न इहि संसार ॥
श्री मद बक्रन कीन्ह केहि · प्रभुता बधिर न काहि ।
मृगनयनी के नयन शर · को अस लागु न जाहि ॥ Contin.

* * * * *

चौपाई ।

यह सब मायाकर परिवारा । प्रबल अमित को बरनै पारा ॥
शिव चतुरानन जाहि डेराहीं । अपर जीव केहि लेखे माहीं ॥ R.Utt.

अर्द्ध चौपाई ।

नारि वृन्द सुर जेंवत जानी । लागी देन गारि मृदु बानी ॥ R.Bal.

N.B.—On occasion of Mahádev's marriage to Párvatí.

दोहा ।

तुलसी या जग आयके · कोन भयौ समरत्थ ।
इक कंचन अरु कुचनपै · किन न पसारे हत्थ ॥ T.

अर्द्ध चौपाई ।

सुर नर मुनि सबकी यह रीती । स्वारथ लागि करैं सम प्रीती ॥ R.Kis.

दोहा ।

सबै सहायक सबलके · कोउ न निबल सहाय ।
पवन जगावत आगको · दीपहि देत बुझाय ॥ S. B.

श्लोक ।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्म्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥ From the Gítá.

Translation:—साधुओंके परित्राण निमित्त औ दुष्टोंके विनाशके हेतु औ धर्म्म स्थापन करनेके लिये मैं युग युग जन्म लेता हूं ।

---

§ 4. *Fakírs.*

सुमरन करमें सुरत न धरमें · कहो भेष यह कैसा ।
ऊपरसे तो सिध बन बैठे · अन्तर पैसा. पैसा ॥ Unk.

मूंड़ मुड़ाये जटा बढ़ाये · मगन फिरे जस भैंसा ।
खलड़ी ऊपर खाक लगाये · मन जैसे का तैसा ॥ Unk.

सोरठा ।

जे अपकारी चार · तिन्हकर गौरव मन्यता ।
मन क्रम बचन लबार · तेबका कलिकाल महं ॥ R. Utt.

मन राखत बैरागमें · घरमें राखत रांड़ ।
तुलसी किरवा नीमको · चाख्यौ चाहत खांड़ ॥ T.

दोहा ।

साधु बड़े परमारथी · मनमें रखें हेत ।
आगे पीछे देखिके · उखाड़ें पराये खेत ॥ Unk.

दोहा ।

साधु बड़े परमारथी · मारें लम्बी दौड़ ।
ब्याही लावें आनकी · माथे रखें न मौर ॥ Unk.

कबित्त ।

नख बिन कटा देखे सीस भारी जटा देखे जोगी कनफटा देखे छार लाय तनमें ।
मौनी अनबोल देखे शेवड़ा सिर छोल देखे करत कलोल देखे बनखंडी बनमें ॥
बीर देखे शूर देखे सब गुनी और क्रूर देखे मायाके पूर देखे भूल रहे धनमें ।
आदि अन्त सुखी देखे जन्महीके दुखी देखे पर वे न देखे जिनके लोभ नाहि मनमें ॥
B.B.

अर्द्ध चौपाई ।

नारि मुई घर संपत नासी । मूड़ मुड़ाय भये सन्यासी ॥ R. Utt.

दोहा ।

नाम भजनको आलसी : खैवे को तैयार ।
तुलसी ऐसे पतितको : बार बार धिरकार ॥ T.

दोहा ।

का भयो जो बन बन फिर्यौ · जो बनि आयो नाहि ।
बनते बनते बन गये · तुलसी घरही माहि ॥ T.

दोहा ।

यथा लाभ सन्तोष सुख · जगपति चरन सनेह ।
तुलसी जो मन हाथ है · जस कानन तस गेह ॥ T.

N.B.—Tulsí Dás has रघुपति, in the place of जगपति ।

दोहा ।

नगर छोड़ जंगल बसे · छूटत नहि जंजाल ।
मनुखन छाड़े का भयो · मनही है चंडाल ॥ J.P.

---

§ 5. *Gurus.*

पानी पीजिये छान औ गुरु कीजिये जान ।

दोहा ।

गुरु लोभी सिख लालची · दोनों खेलें दाव ।
दोनों बपुरे डुब मरें · चढ़ि पाथरकी नाव ॥ K.

चौपाई ।

गुरु सिख अन्ध बधिर सम लेखा । एक न सुने एक नहि देखा ॥
मातु पिता बालकन्ह कहावहिं । उदर भरे सोइ धरम सिखावहिं ॥
हरे शिष्य धन शोक न हरई । सो गुरु घोर नरक महं परई ॥ R. Utt.

N.B.— With some slight alterations and a transposition of the lines not affecting the sense.

अर्द्ध चौपाई ।

मन मलीन तन सुन्दर कैसे · बिष रस भरा कनक घट जैसे ॥ R. Bál.

चौपाई ।

जाति पांति धन धरम बड़ाई । प्रिय परिवार सदन समुदाई ।
सब तजि तुमहि रहे लौ लाई । ताके हृदय बसहु रघुराई ॥ R. Ayod.

चौपाई ।

भक्तिहीन बिरंचि कि न होई । सब जीवन महं अप्रिय सोई ।
भक्तिवन्त अति नीचौ प्रानी । मोहि परमप्रिय सुनु मम बानी ॥ R. Utt.

दोहा ।

बड़े बड़ाई पायके · रोम रोम अहंकार ।
सत गुरुके परिचय बिना · चारों बरन चमार ॥ K.

दोहा ।

चतुराइ चूल्हे पड़ै · भारे परे अचार ।
पार ब्रह्मकी भक्ती पीना · चारो वरण चमार । Unk.

§ 7. *Râm.*

चौपाई ।

एक कल्प सुर देखि दुखारे । समर जलन्धर सन सब हारे ॥
शंभु कीन्ह संग्राम अपारा । दनुज महाबल मरै न मारा ॥
परमसती असुराधिप नारी । तेहि बल ताहि न जीत पुरारी ॥ Contin.

दोहा ।

छल करि टारेउ तासु ब्रत · प्रभु सुर कारज कीन्ह ।
जब तेइ जानेउ मरम तब · स्राप कोप करि दीन्ह ॥ R. Bál.

दोहा ।

असुर सुरा बिष शंकरहिं · आपु रमा मनि चारु ।
स्वारथ साधक कुटिल तुम · सदा कपट व्यवहारु ॥ R. Bál.

चौपाई ।

बंचेहु मोहि जवन धरि देहा । सोइ तन धरहु स्राप मम येहा ॥
कपि आकृति तुम कीन्ह हमारी । करिहहिं कीश सहाय तुम्हारी ॥
मम अपकार कीन्ह तुम भारी । नारि बिरह तुम होव दुखारी ॥ R. Bál.

छन्द ।

भये प्रगट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी ।
हर्षित महतारी मुनि मनहारी अद्भुत रूप निहारी ॥
लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा निज आयुध भुज चारी ।
भूषन बनमाला नयन बिशाला शोभा सिन्धु खरारी ॥ R. Bál.

N.B.—From the first three of these quotations, the deceitful character of Vishṇu is evident; and the last proves Rám to have been an incarnation of that habitual deceiver.

The curse mentioned in the first quotation—inflicted, some say, by Jalandhar, others, by his wife Brindá—was to the effect that Vishṇu should become the Sálagrám stone; from which curse, if this be true, Vishṇu is not yet released. And Brindá, turned into the Tulsí plant, is ever placed on his head. The second and third quotations are said by Mahádev, speaking to his wife Párvatí, to have been spoken by Nárad Muni.

दोहा ।

परशुराम तब राम प्रति · बोले बचन सक्रोध ।
शंभु शरासन तोरि सठ · करसि हमार प्रबोध ॥ R.Bál.

N.B.—Here we have the extraordinary spectacle of two incarnations of Vishṇu not recognizing, and angry with, one another.

चौपाई ।

कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि । कहत लषन सन राम हृदय गुनि ॥
मानहु मदन दुन्दुभी दीन्ही । मनसा बिश्व बिजयकहं कीन्ही ॥
अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा । सिय मुख शशि भये नैन चकोरा ॥
देखि सीय शोभा सुख पावा । हृदय सराहत बचन न आवा ॥ Contin.

दोहा ।

करत बतकही अनुज सन · मन सिय रूप लुभान ।
मुख सरोज मकरन्द छबि · करत मधुप इव पान ॥ R.Bál.

N.B.—Rám's being thus ardently enamoured of Sítá for her beauty and ornaments is very inconsistent with the divinity claimed for him.

चौपाई ।

जेंवत देहिं मधुर धुनि गारी । लै लै नाम पुरुष अरु नारी ॥
समय सुहावन गारि बिराजा । हंसत राउ सुनि सहित समाजा ॥ R.Bál.

N.B.—Rám's being pleased with abusive language proves his want of that perfect holiness which must ever be the distinguishing property of a divine being.

चौपाई ।

बहुरि सोचबस भे सियारमनू । कारन कवन भरत आगमनू ॥
एक आइ अस कहा बहोरी । सेन संग चतुरंग न थोरी ॥
सो सुनि रामहि भा अति सोचु । इत पितु बच उत बंधु सकोचु ॥ R. Ayod.

N.B.—Bharat went into the forest with the intention of persuading Rám to return and reign. But Rám could not read his brother's heart. How, then, is he omniscient ?

अर्द्ध चौपाई ।

सीतहि चितइ कही प्रभु बाता । अहे कुमार मोर लघु भ्राता ॥ R. Ar.

N.B—Rám said this to Súrppanakhá, sister of Rávaṇ; but it is not true, for it is stated in the Bál-Káṇḍ that Rám and his three brothers were married at the same time at Janakpur.

अर्द्ध चौपाई ।

तुम पावक महँ करहु निवासा । जौलगि करौं निसाचर नासा ॥ R. Ar.

चौपाई ।

अहह तात भल कीन्हेउ नाहीं । सिय बिहीन मम जीवन काही ॥ Contin.

* * * * * *

आश्रम देखि जानकी हीना । भये बिकल जस प्राकृत दीना ॥ Contin.

दोहा ।

कानन रहेउ तड़ाग दूव · चक चकई सिय राम ।
रावन निशि बिकुरन किये · दुख बीते चहुं याम ॥ Contin.

* * * * *

चौपाई ।

हा गुनखानि जानकी सीता । रूपशील ब्रत नेम पुनीता ॥
लक्ष्मन समुझाये बहु भांती । पूकृत चले लता तरु पांती ॥
हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी । तुम देखी सीता मृगनैनी ॥ Contin.

किमि सहि जात अनख तोहि पाहीं । प्रिया बेगि प्रगटसि कस नाहीं ॥
इहि बिधि बिलपत खोजत स्वामी । मनहुं महा बिरही अति कामी ॥ Contin.

दोहा ।

फनि मनिहीन दीन जिमि · मीन हीन जिमि बारि ।
तिमि ब्याकुल भये लखन तहं · रघुबर दशा निहारि ॥ R. Ar.

चौपाई ।

बरषा गत निर्मल रितु आई । सुधि न तात सीताकी पाई ॥
एक बार कैसेउं सुधि पावौं । कालहु जीति निमिष महं ल्यावौं ॥
कतहुं रहै जौ जीवति होई । तात यतन करि आनौं सोई ॥
सुग्रीवहुं सुधि मोरि बिसारी । पावा राज कोशपुर नारी ॥
जेहि शायक मैं मारा बाली । तेहि शर हतौं मूढ़कहं काली ॥ Contin.

* * * * * *

लक्ष्मन क्रोधवन्त प्रभु जाना । धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना ॥ R. Kis.

अड्ड चौपाई ।

सीतहिं प्रथम अग्नि महं राखी । प्रगट कीन्ह चह अन्तर साखी ॥ Contin.

* * * * * *

छन्द ।

प्रतिबिंब अरु लौकिक कलंक प्रचंड पावक महं जरे ।
प्रभु चरित काहु न लखेउ सुर मुनि सिद्ध सब देखहिं खरे ॥ R.Lank.

N B.—In Rám's grieving for Sítá and seeking her,—although it is affirmed that he had hidden her in fire, and set forth an imaginary Sítá in her stead,—there is a manifestation of worldly affection and deceit, and in his words regarding Sugrív an exhibition of irritableness and anger, fatal to the idea of his being a Divine person. His ignorance, moreover, of Sítá's whereabouts was incompatible with omniscience.

चौपाई ।

एक रूप तुम भ्राता दोऊ । तेहि भ्रमतें नहिं मारेउं सोऊ ॥ Contin.

* * * * *

मेली कंठ सुमनकी माला । पठवा पुनि बल देइ बिशाला ॥
पुनि नाना बिध भई लराई । बिटप ओट देखहिं रघुराई ॥ Contin.

दोहा ।

बहु छल बल सुग्रीव करि · हृदय हारि भय मानी ।
मारा बालहि राम तब · हिये मांझ शर तानि ॥ R. Kis.

N.B.—The points in this quotation are—(1) Rám's want of knowledge in not being able to distinguish one brother from the other; and (2) his being obliged to kill Báli from an ambush, to avoid the effect of a blessing Báli had obtained, viz. that if any adversary contended with him face to face, half his adversary's strength should be transferred to him.

चौपाई ।

अर्द्ध रात गइ कपि नहिं आवा । राम उठाइ अनुज उर लावा ॥ Contin.

* * * * *

जौ जनतेउँ बन बंधु बिछोहू । पिता बचन नहि मनतेउँ ओहू ॥ Contin.

* * * * *

यथा पंख बिनु खगपति दीना । मनि बिनु फनि करिवर करहीना ॥
अस भम जिवन बंधु बिनु तोही । जौ जड़ दैव जियावै मोही ॥
जैहौं अवध कवन मुख लाई । नारि हेतु प्रिय बंधु गंवाई ॥ R. Lank.

N.B.—Here is Rám's want of foreknowledge, confessed by himself; and his want of power evidenced, by his inability to heal his brother, when wounded by the weapon, called "Sakti Bán".

अर्द्ध चौपाई ।

तात कुशल तव पुन्य प्रभाऊ । जीतेउँ अजै निशाचर राऊ ॥ R. Lank.

N.B.—Here Rám, speaking to his father, disclaims having performed his great works in his own power, by ascribing them to the virtue of his father's merit.

चौपाई ।

तातें उमा मोक्ष नहिं पावा । दशरथ भेद भक्ति मन लावा ॥ Contin.

* * * * *

बार बार करि प्रभुहि प्रनामा । दशरथ हरषि गये सुर धामा ॥ R. Lank.

N. B.—In the opinion of Hindús, *moksh* is "salvation." This, Rám did not,—this passage says,—give to his father. How, then, will he bestow it on others?

अर्द्ध चौपाई ।

कोटिन्ह बाजि मेध प्रभु कीन्हा । अमित दान बिप्रनकहं दीन्हा ॥ Contin.

N. B.—Hindús affirm that these sacrifices, said to be offered by Rám, were intended to expiate the *Brahmahatyá*, of which he was guilty in killing Rávaṇ, who was a Bráhmaṇ,—grandson (*nātī*) of Pulastya-Muni.

चौपाई ।

जो कछु आयसु ब्रह्मै दीन्हा । हरषे देव बिलंब न कीन्हा ॥
बानर देह धरो छिति माहीं । अतुलित बल प्रताप तिन पाहीं ॥
गिरि तरु नख आयुध सब बीरा । हरि मारग चितवहिं रनधीरा ॥
गिरि कानन जहं तहं भरिपूरी । रहे निज निज अनीक रचि रूरी ॥ R. Bál.

N. B.—It is often alleged, as a justification of Rám's warfare with Rávaṇ, that it was undertaken in order to deliver the devtás from his cruel bondage: but this passage asserts that the devtás, instead of being in bondage, had taken the form of monkeys, etc., and were waiting to do Rám service.

अर्द्ध चौपाई ।

मुक्त न भयेउ हते भगवाना । तीनि जन्म द्विज बचन प्रमाना ॥ R. Bál.

चैापाईका एक चरण ।

तासु तेज प्रविशे प्रभु आनन ॥ R. Laṅk.

N. B.—It is often asserted that Rám gave final emancipation (*mukti*) to those whom he slew. This is confuted by the former of the above quotations. Jaya and Vijaya, cursed by a Bráhmaṇ, first became Hiraṇyakashipu and Háṭakalochan; then, Rávaṇ and Kumbhakarṇ, but had yet to be born as Kaṅs and (?) ere they could be emancipated.

The quotation from the Laṅká-Káṅḍ, understood from a Hindú point of view, is a contradiction of the preceding one.

दोहा ।

एक भरोसे रामके · किये पाप भर मेाट ।
जैसे नारि कुनारिकेां · बड़ी खसमकी ओाट ॥ T.

CHAPTER IV.

Respecting sundry virtues and vices.

---

§ 1. *Sundry moral duties.*

चौपाई ।

मन है मन्दिर ईश्वर भाई । ता बिच राखहु अति फरकाई ॥
तब देखहु तुम ज्योति प्रकासा । होय जाय भव भ्रम तम नासा ॥ S.M.N.

दोहा ।

भक्ति भाव भादों नदी · सबै चले गहिराय ॥
सलिता सो सराहिये · जु जेठ मास ठहिराय ॥ K.

कुंडलिया ।

पानी बाढ़्यौ नावमें · घरमें बढ़्यौ दाम ।
दोऊ हाथ उलीचिये · यही सयानौ काम ॥
यही सयानौ काम · नाम ईश्वरकौ लीजै ।
परस्वारथ के काज · सीस आगै धर दीजै ॥
कह गिरधर कबिराय · बड़ेनकी यही है बानी ।
चलिये चाल सुचाल · राखिये अपनौ पानी ॥ G.

दोहा ।

गो धन गज धन बाजि धन · और रतन धन खान ।
जब आवत सन्तोष धन · सब धन धूरि समान ॥ T.

दोहा ।

रूखी फीकी खायके · ठंडा पानी पीव ।
देखि पाराई चूपड़ीं · मत ललचावे जीव ॥ Unk.

चौपाई ।

जौ बैरी खैंचे तरवार । करे साधु ताकी मनुहार ॥
समुझ मूढ़ आपी पछिताय । जैसे पानी आग बुझाय ॥ P. S.

दोहा ।

जो तोकुं कांटे बुवे · ताहि बोइ तू फूल ।
तोकुं फूलके फूल है · ताकुं है तिरशूल ॥ K.

दोहा ।

दुरबलको न सताइये · जाकी मोटी हाय ।
मुई खालकी स्वाससों · सार भस्म होइ जाय ॥ K.

दोहा ।

साईंसे सच्चे रहो · बन्दे से सदभाव ।
चाहे लंबी दाढ़ी रखो · चाहे घोट मुंड़ाव ॥ K.

---

§ 2. *Love.*

दोहा ।

जा घट प्रेम ना बसे · ता घट जानु मसान ।
जैसे खाल लुहारके · सांस लेत बिनु प्रान ॥ K.

दोहा ।

प्रेम न बारी ऊपजे · प्रेम न हाट बिकाय ।
बिना प्रेमका मनुआ · बांधे यमपुर जाय ॥ K.

सोरठा ।

जल पय सरिस बिकाय · देखहु प्रीतिकि रीति भलि ।
बिलग होइ रस जाय · कपट खटाई परतही ॥ R. Bál.

दोहा ।

प्रेम पियाला सो पिये · जु सीस दक्षिना देत ।
लोभी ससी न दे सके · नाम प्रेम का लेत ॥ K.

दोहा ।

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ · पंडित भया न कोइ ।
ढाई अच्छर प्रेमका · पढ़े सु पंडित होइ ॥ K.

---

§ 3. Truth and falsehood.

दोहा ।

सांच बरोबर तप नहीं · झूठ बरोबर पाप ।
जाके हिरदै सांच है · ताके हिरदै आप ॥ K.

दोहा

सत्य बचन मुख जो कहत · ताकी चाह सराह ।
गाहक आवत दूरतें · सूनि हुक शब्दी नाह ॥ B.S.

दोहा ।

जग परतीति बढ़ाइयै · रहियै सांचे होय ।
झूठे नरकी सांचियै · साखि न मानै कोय ॥ B.S.

दोहा ।

फेर न ह्वैहै कपटसों · जो कीजै ब्यौपार ।
जैसे हांडी काठकी · चढ़ै न दूजी बार ॥ B.S.

दोहा ।

जान बूझ अजगुत करै · तासों कहा बसाय ।
जागतही सोवत रहै · तिहि को सकै जगाय ॥ B.S.

दोहा ।

कहते हैं करते नहीं · सेा तो बड़े लबार ।
आखिर धक्का खांयगे · साहिब के दरबार ॥ K.

§ 4. *Sundry vices.*

दोहा ।

चिमिरि गई रबि देखते · कुमति गई गुरु ज्ञान ।
सुमति गई इक लोभतें · भक्ति गई अभिमान ॥ K.

दोहा ।

खेत बिगाड़े खरतुआ · सभा बिगाड़े मूढ़ ।
भक्ति बिगाड़े लालची · ज्यों केसरमें धूर ॥ K.

दोहा ।

तुलसी पूरन पापतें · प्रभु चरचा न सुहाय ।
जैसे ज्वरके अंशतें · भोजनकी रुचि जाय ॥ T.

N.B.—Tulsí-Dás has हरि in place of प्रभु.

CHAPTER V.

On the duty of attention to religion.

दोहा ।

जिन खोज्यो तिन पाइयो · गहिरे पानी पैठ ।
बक बेचारा क्या करे · रहे किनारे बैठ ॥ K.

Another version :—

जिन ढूंढ़ा तिन पाइयां · गहिरे पानी पैठ ।
वे बपुरे क्या पाइयां · जो रहे किनारे बैठ ॥

दोहा ।

बुरे लगत सिखके बचन · हिये बिचारो आप ।
करवे भेषज बिन पिये · मिटै न तनको ताप ॥ B. S.

दोहा ।

साहिब साहिब सब कहैं · मोहि अन्देशा और ।
साहिबसों परिचय नहीं · बैठों मैं को ठौर ॥ K.

N.B.—Instead of the last line some say बैठब कौने ठौर ॥

दोहा ।

साईंके घर दूर है · जैसी लंबी खजूर ।
चढ़े तो चाखे प्रेमरस · गिरे तो चकनाचूर ॥ K.

दोहा ।

कल्य करे सो आजही · आज करे सो अब्ब ।
पलमें परलय होयगी · बहुरि करेगो कब्ब ॥ K.

चौपाई ।

चेत रहत कछु चेतहु भाई । देखहु श्वासा करि चतुराई ।
छन छन बाजत कूंच दमम्मा । होहु सयुग जनि करहु बिलम्मा ॥ S. M. N.

चौपाई ।

तृषित वारि बिनु जौं तन त्यागा । मुए करै का सुधा तड़ागा ॥
का बरषा जब कृषी सुखाने । समय चूक पुनि का पछिताने ॥ R. Bal.

दोहा ।

जो न तरै भवसागरहिं · नर समाज अस पाइ ।
सो कृतनिन्दक मन्दमति · आतमहन गति जाइ ॥ R. Utt.

दोहा ।

प्रान तृषातुरके रहै · थोरेहू जल दान ।
पाछै जल भर सहस घट · डारे मिलत न प्रान ॥ B. S.

दोहा ।

संगत कीजै साधकी · हरे और की व्याध ।
ओछी संगत नीचकी · आठो पहर उपाध ॥ R. N.

दोहा ।

स्वाति बून्द सीपी मुकत · केदलि भयो कपूर ।
कारीके मुख बिष भयो · संगति शोभा सूर ॥ S.

दोहा ।

करत करत अभ्यासके · जड़ मति होत सुजान ।
रसरी आवत जात तें · सिलपर परत निसान ॥ S. B.

दोहा ।

बुरा जो देखन मैं चला · बुरा न दीखे कोइ ।
जो दिल खोजों आपना · मुझसा बुरा न कोइ ॥ K.

कुंडलिया ।

बीती ताहि बिसार दै · आगेकी सुध लेय ।
जो बनि आवै सहजमें · ताहीमें चित देय ॥
ताहीमें चित देय · बात जोही बनि आवै ।
दुरजन हंसै न कोइ · चित्तमें खेद न पावै ॥
कह गिरधर कबिराय · यहे कर मन परतीती ।
आगेकौं सुख होय · समुझ बीती सो बीती ॥ G.

CHAPTER VI.

Concerning inconsideration, and neglect of religion.

कुंडलिया ।

बिना बिचारे जो करै · सो पाछे पछिताय ।
काम बिगारै आपनो · जगमें होत हंसाय ॥
जगमें होत हंसाय · चित्तमें चैन न पावै ।
खान पान सनमान · राग रंग मनहि न आवै ॥
कह गिरधर कबिराय · दुःख कछु टरत न टारे ।
खटकत है जिय माहिं · कियो जो बिना बिचारे ॥ G.

दोहा ।

देखा देखी करत सब · नाहिन तत्व बिचार ।
याको यह अनुमान है · भेड़ चाल संसार ॥ B. S.

A neat saying.

मिट्टी को बचा लेना · और मोती को खो देना ।

दोहा ।

ज्ञान संपूरन ना भयो · हिरदै नहीं जुड़ाय ।
देखा देखी भक्तिका · रंग नहीं ठहराय ॥ K.

दोहा ।

बैठि निसागम निलइमें · करें दीपकी बात ।
तुलसी देखु बिचार उर · तम नहि नेकु नसात ॥ T.

दोहा ।

सो परन्तु दुख पावई · सिर धुनि धुनि पछिताइ ।
कालहि कर्महि ईश्वरहि · मिथ्या दोष लगाइ ॥ R.Utt.

दोहा ।

मूरखको पोथी दई · बांचनको गुन गाथ ।
जैसे निरमल आरसी · दई अन्धके हाथ ॥ S. B.

Urdú verses on the same subject.

دینا ھی دل کو اپنے تو دے اُس کسي کے ھاتھہ
جس یار سے کہ ھو تیرے جیئے موئے کا ساتھہ
اور یہہ جو تجھسے کرتے ھیں مل مل کے میٹھي بات
مارا پڑیگا دیکھہ نہ کھا اِن کي آت گھات.N

جس کا تو ھی فقیر اُسي کو سمجھہ تو یار
مانگے تو مانگ اُسّے ھي کیا نقد کیا اُدھار
دیوے تو لے وھي جو نہ دیوے تو دم نہ مار
اُس کے سوا کسي سے نہ رکھہ اپنا کاروبار .N

پیارے ابھي تجھے تو بہت کاٹني ھی راہ
اور ٹھگ قدم قدم پہ تیرے ساتھہ روسیاہ
آتا ھی تیرے حال پر رونا مجھے تو آہ
اللہ اِسي راہ پہ تیري کرے نباہ .N

CHAPTER VII.

On the vanity of the world.

अरल ।

यह दुनिया बाजीद पलकका पेखना ।
यामें बहुत बिगार कहो क्या देखना ॥
सब जीवनका जीव जगत आधार है ।
पर हां बाजीदा जो न भजे भगवन्त कुठीमें क्वार है ॥ B.

अरल ।

हों जानौं कछु मीठ अन्तकह तीत है ।
देख्यौ हृदय बिचार यह देह अनित्य है ॥
पान फूल रस भोग अन्तकह रोग है ।
पर हां बाजीदा प्रीतम प्रभुके नाम बिना सब भोग है ॥ B.

अरल ।

दो दो दीपक बाल महलमें सोवते ।
नारीसे कर नेह जगत नहि जोवते ॥
सौंधा तेल लगाय पान मुख खांयगे ।
पर हां बाजीदा बिना भजन भगवान कि मिथ्या जांयगे ॥ B.

दोहा ।

अर्ब खर्बलों द्रव्य है · उदय अस्तलों राज ।
तुलसी जौं निज मरन है · आवै कौने काज ॥ T.

दोहा ।

बहुत द्रव्य संचय जहां · चोर राज भय होय ।
कांसे ऊपर बीजुरी · परत कहत सब कोय ॥ S. B.

दोहा ।

धन अरु जौवनकौ गरब · कबहू करियै नाहिं ।
देखतही मिट जात है · ज्यों बादरकी छाहिं ॥ B.S.

दोहा ।

सुखमें सज्जन बहुत हैं · दुखमें लीने छीन ।
सोना सज्जन कसनकौं · बिपत कसौटी कीन ॥ R.N.

CHAPTER VIII.

On the certainty of death, and uncertainty of life.

चौपाई ।

या जग औ जग आवनहारे । मध्य मृत्यु मुख खोलि निहारे ।
एक सकेत सेतु पर जोई । अस को जन जो अचार न होई ॥ Bowley.

दाता को महिप मानधाता औ दलीप जाके जस अजहूं लौं द्वीप द्वीप छाये हैं ।
बलि ऐसो बलवान को भयो जहान बीच रावण समान को प्रतापी जग जाये हैं ॥
बाण की कलान में सुजान द्रोणपारथ सो जाके जस कृष्णजी भारत में गाये हैं ।
कैसे कैसे सूर रचे चातुरी जगदीस जू फेर चकचूर करि धूरि में मिलाये हैं ॥ S. S.

दोहा ।

टुक टिकवेके कारने · केतक ठक ठक होय ।
केतक ठक ठक कर गये · टुक टिक रहा न कोय ॥

دنیا اِسے نہ جان یہہ دریاے لہر دار
لاکھوں میں اِسّے کوئي اُتر کر ہوا ہی پار
جب تو بہا تو پھر نہ ملیگا تجھے کنار
ملّاہ یہاں نہ ناو نہ بلّي ہی میرے یار N.

दोहा ।

नौ द्वारेका पींजरा · तामें पंछी पौन ।
रहनेको आश्चरज हे · गये अचंभा कौन ॥ K.

अरल ।

घड़ी घड़ी घड़याल पुकारे कही हे ।
बहुत गई हे अवधि अल्पही रही हे ॥
सोवे कहा अचेत जाग जप पीवरे ।
पर हां बाजीदा चली हे आज कि काल बटाउ जीवरे ॥ B.

दोहा ।

जो कल करे सेा आज · जो आज के सेा अब ।
पलमें परलय होवेगी · बहुरि करेगा कब ॥ K.

दोहा ।

बज्यो नगारा तीसरो · श्वेत धजा फहिरान ।
तुलसी अब कहं गाफिलो · कूच आइ नगचान ॥ T.

CHAPTER IX.

On the future requital of good and evil conduct.

दोहा ।

तुलसी काया खेत है · मनसा भयो किसान ।
पाप पुन्य दोउ बीज है · बवै सो लुनै निदान ॥ T.

दोहा ।

भले भलाईयै लहहिं · लहहिं निचाई नीच ।
सुधा सराहिय अमरता · गरल सराहिय मीच ॥ R. Bál.

दोहा ।

करै बुराई सुख चहै · कैसे पावै कोइ ।
रोपै पेड़ बबूलको · आम कहांतें होइ ॥ S. B.

CHAPTER X.

Hindú sayings, with which it well to be acquainted.

श्लोक ।

जले विष्णुः स्थले विष्णु र्विष्णुः पर्व्वतमस्तके ।
ज्वालमालाकुले विष्णुः सर्व्वं विष्णुमयं जगत् ॥ Unk.

Translation :—विष्णु जलमें है विष्णु थलमें है विष्णु पर्व्वतकी चोटीमें है विष्णु अग्नि माला आदिमें है विष्णु समस्त जगतमें व्यापक है ।

अर्द्ध चौपाई ।

समरथकहं नहिं दोष गुसाईं । रबि पावक सुरसरिकी नाईं ॥ R. Bál.

चौपाई ।

ईश्वर अंश जीव अबिनाशी । चेतन अमल सहज राशी ॥
सो माया बश भयउ गुसाईं । बंध्यो कीर मरकट की नाईं ॥ R. Utt.

श्लोक ।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥ From the Gítá.

Translation :—इस (जीवात्मा) को न शस्त्र काटता है न अग्नि जलाती है और न जल भिंगाता है न बयार सुखाती है ।

अर्द्ध चौपाई ।

क्षिति जल पावक गगन समीरा । पंच रचित यह अधम शरीरा ॥ R. Kis.

अर्द्ध चौपाई ।

कर्म प्रधान बिश्व करि राखा । जो जस कर सो तस फल चाखा ॥ R. Ayod.

दोहा ।

सुनहु भरत भावी प्रबल · बिलखि कहेउ मुनिनाथ ।
हानि लाभ जीवन मरन · यश अपयश बिधि हाथ ॥ R.Ayod.

दोहा ।

बोले बिहँसि महेश तब · ज्ञानी मूढ़ न कोइ ।
जब जैसी रघुपति करे · तब तैसी बुधि होइ ॥ R. Bál.

N.B.—This is the form of this verse generally known. In the original the second line stands thus—जेहि जस रघुपति करहिं जब · सो तस तेहि छन होइ ॥

अर्द्ध चौपाई ।

उमा दारु जोषितकी नाईं । सबहि नचावत राम गुसाईं ॥ R. Kis.

अर्द्ध चौपाई ॥

नट मरकट इव सबहि नचावत । राम खगेश बेद अस गावत ॥ R. Kis.

चौपाई ।

एक राम अवधेश कुमारा । तिनकर चरित बिदित संसारा ॥
नारि बिरह दुख लहेउ अपारा । भये रोष रन रावन मारा ॥ R. Bál.

चौपाई ।

जब जब होइ धर्मकी हानी । बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी ॥

* * * * *

तब तब प्रभु धरि बिबिध शरीरा । हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा ॥ R. Bál.

अर्द्ध चौपाई ।

जब जब राम मनुज तनु धरहीं । भक्त हेतु लीला बहु करहीं ॥ R. Utt.

श्लोक ।

जगन्नाथमुखं दृष्ट्वा पद्मनाभं जनार्द्दनं ।
कोटि जन्म भवेद् विप्रो वेदपारो महाधनः ॥

From the Jagannátha Máhátmya.

Translation :—जगन्नाथ जिसकी कंवलसी नाभी है औ जो नर लोगकी ताड़ना करनेहार है तिसके मुखके दर्शन द्वारा मनुष्य कोटि जन्मलों वेदाभ्यासी औ अति धनवान विप्र होता है ।

अर्द्ध चौपाई ।

दरस परस मज्जन अरु पाना । हरै पाप कह बेद पुराना ॥ R. Bál.

N.B.—Said originally of the Sarjú river, but generally applied to the Ganges.

अर्द्ध चौपाई ।

सादर मज्जन पान किये तें । मिटहिं पाप परिताप हिये त ॥ R. Bál.

श्लोक ।

दृष्ट्वा जन्मशतं पापं पीत्वा जन्मशतद्वयं ।
स्नात्वा जन्मसहस्रेषु हन्ति गंगा कलौ युगे ॥

From the Gangá-Máhátmya.

Translation :—गंगा कलियुगमें दर्शनके द्वारा सौ जन्मका औ पीने से दो सौ जन्मका औ स्नान करनेसे सहस्र जन्मका पाप हरण करती है ।

श्लोक ।

पापोहं पापकर्म्माहं पापात्मा पापसम्भवः ।
त्राहि मां पुण्डरीकाक्ष सर्व्वपापहरो मम ॥

Well-known Mantra (from the Páṇḍav-Gítá).

Translation :—मैं पाप हूं मेरा कर्म्म पाप है मेरा आत्मा पापमय औ पापमें मेरा जन्म हुआ है कंवल सदृश नेत्रवाले (अर्थात् विष्णु) हे मेरे सब पापके हरण करनेवाले तू मुझपर कृपा कर ।

दोहा ।

अपने अपने कर थपे · लिख पूजत तिय भीत ।
सुफल फले मन कामना · तुलसी प्रेम प्रतीत ॥ T.

दोहा ।

दुखमें सुमिरन सब करै · सुखमें करै न कोइ ।
सुखमें जो सुमिरन करै · तो दुख काहे होइ ॥ K.

Another version :—

दुख में सब हरिको भजे · सुख में भजे न कोइ ।
सुख में जो हरिको भजे · तो दुख कहाते होइ ॥

जाति पांति पूछे न कोई · जो हरिको भजे सेा हरिका होई ॥ S.B.

Precept given by Kabír to his followers for the avoidance of persecution.

सबसे हिलिये सबसे मिलिये सबके लिजिये नाउं ।
हांजी हांजी सबसे कहिये बसिये अपने गाउं ॥